डॉ० राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद (उ०प्र०)

पाठ्यक्रम : हिन्दी साहित्य

बी०ए० प्रथम वर्ष

(सन् २०१७-१८ की परीक्षा से और उससे आगे.....)

प्रथम प्रश्न पत्र : मध्यकालीन हिन्दीकाव्य — पूर्णांक : १००

अंक-विभाजन :	व्याख्या	तीन ३० अंक (३x१०)
	लघुउत्तरीय प्रश्न	पाँच ४० अंक (५x८)
	दीर्घ उत्तरीय (समीक्षात्मक) प्रश्न	दो ३० अंक (२x१५)

निर्धारित कवि एवं उनके काव्यांश :

१.	कबीरदास	२५ साखी एवं १० पद
२.	जायसी	'पद्मावत' का एक खण्ड
३.	सूरदास	'सूरसागर' से ३० पद
४.	तुलसीदास	'रामचरितमानस' से एक प्रसंग
५.	बिहारी	३० दोहे ('बिहारी सतसई' से)
६.	घनानन्द	२० छन्द ('घनानन्द-कवित्त' से)

पुस्तक : मध्यकालीन काव्यमंजूषा

सम्पादक : (१) प्रो० सदानन्द शाही, हिन्दी विभाग, बी०एच०यू०, वाराणसी।

(२) डॉ० (श्रीमती) प्रमिला बुधवार, महिला पी०जी० कालेज, बहराइच।

द्रुत-पाठ हेतु - रहीम, केशव तथा भूषण निर्धारित किये गये हैं, इन कवियों में से प्रत्येक पर केवल लघु उत्तरीय प्रश्न ही पूछे जायेंगे। व्याख्या तथा दीर्घ उत्तरीय प्रश्न केवल मूल पाठ से पूछे जायेंगे।

सन्दर्भ ग्रन्थ :

१. कबीर	:	आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी
२. कबीर-मीमांसा	:	डॉ० रामचन्द्र तिवारी
३. कबीर	:	डॉ० विजयेन्द्र स्नातक
४. मध्ययुगीन काव्यसाधना	:	डॉ० रामचन्द्र तिवारी
५. मध्यकालीन काव्यसाधना	:	डॉ० वासुदेव सिंह
६. जायसी	:	डॉ० विजयदेव नारायण साही
७. हिन्दी सूफी-काव्य का समग्र अनुशीलन	:	डॉ० शिवसहाय पाठक
८. जायसी-ग्रन्थावली (भूमिका)	:	आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
९. जायसी का शिल्प-विधान	:	डॉ० छोटेलाल दीक्षित
१०. हिन्दी के सूफी प्रेमाख्यान	:	आचार्य परशुराम चतुर्वेदी
११. उत्तरी भारत की संत-परम्परा	:	आचार्य परशुराम चतुर्वेदी
१२. पद्मावत का काव्य-सौन्दर्य	:	डॉ० शिवसहाय पाठक
१३. जायसी और उनका काव्य	:	डॉ० शिवमूर्ति शर्मा
१४. सूर और उनका साहित्य	:	डॉ० हरबंशलाल शर्मा
१५. सूरदास	:	आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
१६. भ्रमर-गीत-सार	:	आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
१७. सूर की काव्य-माधुरी	:	डॉ० रमाशंकर तिवारी
१८. सूर-काव्य-विमर्श	:	डॉ० राधिकाप्रसाद त्रिपाठी
१९. सूर-काव्य-मीमांसा	:	डॉ० हौसिलाप्रसाद सिंह
२०. सूर-काव्य-समीक्षा	:	डॉ० ओंकारनाथ त्रिपाठी
२१. गोस्वामी तुलसीदास	:	आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
२२. तुलसी-काव्य-मीमांसा	:	डॉ० उदयभानु सिंह
२३. तुलसी-साहित्य-सुधा	:	डॉ० भगीरथ मिश्र
२४. तुलसी-तितीर्षा	:	डॉ० रामशंकर त्रिपाठी
२५. त्रिवेणी	:	आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
२६. रामकाव्य और तुलसी	:	डॉ० प्रेमशंकर
२७. रामचरितमानस और वाल्मीकि रामायण	:	डॉ० राधिकाप्रसाद त्रिपाठी

२८.बिहारी	:	आचार्य विश्वनाथप्रसाद त्रिपाठी
२९.बिहारी की वाग्विभूति	:	आचार्य विश्वनाथप्रसाद त्रिपाठी
३०.कवि-त्रयी	:	डॉ० रामफेर त्रिपाठी
३१.बिहारी का काव्य-लालित्य	:	डॉ० रमाशंकर तिवारी
३२.बिहारी का नया मूल्यांकन	:	डॉ० बच्चन सिंह
३३.रीतिकाव्य की भूमिका	:	डॉ० नगेन्द्र
३४.बिहारी के काव्य का पुनर्मूल्यांकन	:	डॉ० रामदेव शुक्ल
३५.घनानन्द का काव्य	:	डॉ० रामदेव शुक्ल
३६.घनानन्द और स्वच्छन्द काव्य-धारा	:	डॉ० मनोहरलाल गौड़
३७.घनानन्द	:	डॉ० कृष्णचन्द्र वर्मा
३८.घनानन्द का काव्य-सौष्ठव	:	डॉ० त्रिलोचन पाण्डेय
३९.रहीम-बड़े व्यक्ति : बड़े कवि	:	डॉ० रामशंकर त्रिपाठी
४०.आचार्य केशवदास	:	डॉ० हीरालाल दीक्षित
४१.केशव की काव्य-कला	:	डॉ० कृष्णशंकर मिश्र
४२.केशव और उनका साहित्य	:	डॉ० विजयपाल सिंह
४३.केशव का आचार्यत्व	:	डॉ० विजयपाल सिंह
४४.बिहारी और उनका साहित्य	:	डॉ० हरवंशलाल शर्मा
४५.रहीम-ग्रन्थावली	:	(सम्पादक) डॉ० विद्यानिवास मिश्र
४६.भूषण	:	राजमल बोरा

द्वितीय प्रश्नपत्र : हिन्दी-निबन्ध, नाटक एवं एकांकी

पूर्णांक : १००

अंक-विभाजन :	व्याख्या	तीन ३० अंक (३x१०)
	लघुउत्तरीय प्रश्न	पाँच ४० अंक (५x८)
	दीर्घ उत्तरीय (समीक्षात्मक) प्रश्न	दो ३० अंक (२x१५)

(क) निबन्ध : निर्धारित निबन्धकार :

१. प्रतापनारायण मिश्र
२. महावीर प्रसाद द्विवेदी
३. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
४. आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी
५. डॉ० विद्यानिवास मिश्र
६. डॉ० रामविलास शर्मा
७. कुबेरनाथ राय

पाठ्यपुस्तक : निबन्ध-दर्पण

सम्पादक : (१) डॉ० प्रभाकर मिश्र, अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, आचार्य नरेन्द्र देव किसान पी०जी० कालेज, बभनान, गोण्डा।

(२) डॉ० मधु खन्ना, हिन्दी विभाग, राजा मोहन गर्ल्स पी०जी० कालेज, फैजाबाद।

(ख) नाटक : ध्रुवस्वामिनी (जयशंकर प्रसाद)

(ग) एकांकी : निर्धारित एकांकीकार :

१. डॉ० रामकुमार वर्मा
२. भुवनेश्वर
३. उपेन्द्रनाथ अश्क
४. उदयशंकर भट्ट
५. लक्ष्मीनारायण मिश्र

पाठ्यपुस्तक : एकांकी-निकुंज

सम्पादक : (१) डॉ० (श्रीमती) रेखा श्रीवास्तव, इन्दिरा गांधी महाविद्यालय, गौरीगंज, अमेठी।

(२) डॉ० आशुतोष मिश्र, महामाया राजकीय महाविद्यालय, श्रावस्ती।

द्रुत-पाठ हेतु - राहुल सांकृत्यायन, मोहन राकेश तथा जगदीशचन्द्र माथुर का अध्ययन अपेक्षित होगा। इनमें से प्रत्येक पर केवल लघुउत्तरीय प्रश्न ही पूछे जायेंगे। व्याख्या तथा दीर्घ उत्तरीय प्रश्न मूल पाठ से पूछे जायेंगे।

सन्दर्भ ग्रन्थ :

१. हिन्दी का गद्य-साहित्य	:	डॉ० रामचन्द्र तिवारी
२. महावीर प्रसाद द्विवेदी और उनका युग	:	डॉ० उदयभानु सिंह
३. भारतेन्दुयुगीन निबन्ध	:	डॉ० शिवनाथ
४. द्विवेदीयुगीन निबन्ध-साहित्य	:	डॉ० गंगाबख्श सिंह
५. हिन्दी निबन्धकार	:	डॉ० जयनाथ नलिन
६. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल	:	डॉ० जयचन्द्र राय
७. आचार्य शुक्ल : सन्दर्भ एवं दृष्टि	:	डॉ० जगदीशनारायण पंकज
८. निबन्धकार : आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी	:	डॉ० विजयबहादुर सिंह
९. हिन्दी निबन्ध का विकास	:	डॉ० ओंकारनाथ शर्मा
१०. निबन्ध : सिद्धान्त और प्रयोग	:	डॉ० हरिहरनाथ द्विवेदी
११. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी	:	डॉ० विश्वनाथप्रसाद तिवारी
१२. प्रसाद के ऐतिहासिक नाटक	:	डॉ० जगदीश चन्द्र जोशी
१३. प्रसाद के नाटकों का शास्त्रीय अध्ययन	:	डॉ० जगन्नाथ प्रसाद शर्मा
१४. हिन्दी नाटक : उद्भव और विकास	:	डॉ० दशरथ ओझा
१५. एकांकी और एकांकीकार	:	डॉ० रामचरण महेन्द्र
१६. हिन्दी-नाटक	:	डॉ० बच्चन सिंह
१७. प्रसाद का नाट्य शिल्प	:	डॉ० बनवारीलाल हाण्डा
१८. प्रसाद के नाटकों के नारी-पात्र	:	डॉ० मुकुलरानी सिंह
१९. हिन्दी-एकांकी	:	डॉ० महेन्द्र भटनागर
२०. हिन्दी-एकांकी : समग्र अध्ययन	:	डॉ० अब्दुर्रशीद ए० शेख
२१. ध्रुवस्वामिनी का शास्त्रीय विवेचन	:	डॉ० पुरुषोत्तमदास अग्रवाल
२२. मोहन राकेश और उनके नाटक	:	डॉ० गिरीश रस्तोगी
२३. हिन्दी निबन्ध और निबन्धकार	:	डॉ० रामचन्द्र तिवारी
२४. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल	:	डॉ० रामचन्द्र तिवारी

डॉ० राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैज़ाबाद (उ०प्र०)

विस्तृत पाठ्यक्रम : हिन्दी साहित्य
बी०ए० : भाग एक
(वर्ष/सत्र 2017-18 की परीक्षा से और उससे आगे)
प्रथम प्रश्नपत्र : मध्यकालीन हिन्दी काव्य

पूर्णांक : 100
परीक्षा प्रणाली : बहु विकल्पीय ओ०एम०आर० सीट पर

निर्धारित कवि एवं उनके काव्यांश :

1.	कबीरदास	25 साखी एवं 10 पद	विवरण संलग्न है।
2.	जायसी	पद्मावत का नागमती वियोग खण्ड	
3.	सूरदास	सूरसागर से 30 पद	विवरण संलग्न है।
4.	तुलसीदास	रामचरितमानस–बालकाण्ड के आरम्भ से 15 दोहे तक	
5.	बिहारी	बिहारी सतसई से 30 दोहे	विवरण संलग्न है।
6.	घनानन्द	घनानन्द कवित्त से 20 छन्द	विवरण संलग्न है।

पुस्तक : मध्यकालीन काव्यमंजूषा

सम्पादक :

1. प्रो० सदानन्द शाही, हिन्दी विभाग, बी०एच०यू०, वाराणसी।
2. डॉ० (श्रीमती) प्रमिला बुधवार, महिला पी०जी० कॉलेज, बहराइच।

द्रुत पाठ हेतु : रहीम, केशव तथा भूषण निर्धारित किये गये हैं। इन कवियों में से प्रत्येक पर केवल लघु उत्तरीय प्रश्न ही पूछे जायेंगे। व्याख्या तथा दीर्घ उत्तरीय प्रश्न केवल मूलपाठ (कविता) से पूछे जायेंगे।

बी०ए० भाग-एक संलग्नक 4 पेपर

कबीरदास

साखी

गुरुदेव को अंग

सतगुरु सवाँ न को सगा, सोधी सईं न दाति।
हरिजी सवाँ न को हितू, हरिजन सईं न जाति॥ 1॥

बलिहारी गुर आपकी, घरी घरी सौ बार।
मानुष तैं देवता किया, करत न लागी बार॥ 2॥

सतगुर की महिमा अनँत, अनँत किया उपगार।
लोचन अनँत उघारिया, अनँत दिखावनहार।। 3।।

राम नाम कै पटंतरे, देबे कौं कुछ नाहिं।
क्या ले गुरु सन्तोषिए, हौंस रही मन माहिं।। 4।।

सतगुरु कै सदकै करूँ, दिल अपनों का साछ। (साँच)
कलिजुग हम सौं लड़ि पड़ा, मुहकम मेरा बाछ (बाँच)।। 5।।

बिरह को अंग

राती रूनी बिरहिनी, ज्यौं बञ्चौं को कुंज।
कबीर अंतर प्रगट्यो, बिरह अग्नि को पुंज।। 6।।

अम्बर कुंजाँ कुरलियाँ, गरजि भरे सब ताल।
जिनि ते गोविंद बीछुटे, तिनको कवन हवाल।। 7।।

चकई बिछुरी रैनि की, आइ मिली परभाति।
जे जन बिछुटे राम सौं, ते दिन मिले न राति।। 8।।

बासुरि सुख नाँ रैनि सुख, ना सुख सुपिनै माँह।
कबीर बिछुड़े राम सौं, ना सुख धूप न छाँह।। 9।।

बिरहिनि ऊभी पंथ सिरि, पंथी बूझै धाइ।
एक सबद कहि पीव का, कबर मिलैंगे आइ।। 10।।

बहुत दिनन की जोवती, बाट तुम्हारी राम।
जिव तरसै तुझ मिलन को, मन नाहीं बिसराम।। 11।।

बिरहिन कठै भी पड़ै, दरसन कारनि राम।
मूवाँ पीछै देहुगे, सो दरसन किहि काम ।। 12।।

मूवाँ पीछै जिनि मिलै, कहै कबीरा राम।
पाथर घाटा लोह सब, (तब) पारस कौने काम ।। 13।।

अँदेसौ नहिं भाजिसी, संदेसौ कहियाँ।
कै हरि आयाँ भाजिसी, कै हरि ही पासि गयाँ ।।14।।

आइ न सक्कौं तुझ्झ पै, सक्कूँ न तुज्झ बुलाइ।
जियरा योंही लेहुगे, बिरह तपाइ तपाइ ।।15।।

ग्यान विरह को अंग

दीपक पावक आँनिया, तेल भि आना संग।
तीन्यूँ मिलि करि जोइया, (तब) उड़ि उड़ि पड़ैं पतंग।। 16।।

मारा है जे मरैगा, बिन सर थोथी भालि।
पड़ा पुकारे ब्रिछ तरि, आजि मरै कै काल्हि ।।17।।

हिरदै भीतरि दौ बलै, धूवाँ न परगट होइ।
जाके लागी सो लखै, कै जिहि लाई सोइ ।। 18।।

झल ऊठी झोली जली, खपरा फूटिम फूटि।
जोगी था सो रमि गया, आसनि रही विभूति।। 19।।

अगि जु लागि नीर महिं, कांदौ जरिया झारि।
उतर दखिन के पंडिता, मुए बिचारि बिचारि॥ 20।।

करनी बिना कथनी को अंग

कथनी कथी तो क्या भया, जे करनी नाँ ठहराइ।
कालबूत के कोट ज्यौं, देखत ही ढहि जाय ।। 21।।

जैसी मुख तैं नीकसै, तैसी चालै चाल।
पारब्रह्म नियरा रहै, पल मैं करै निहाल ।।22।।

जैसी मुख तैं नीकसै, तैसी चालै नाँहि।
मानुख नहीं ते स्वान गति, बाँधे जमपुर जाँहिं ।। 23।।

पद गाए मन हरखियाँ, साखी कहैं अनन्द।
जो तत नाउँ न जानियाँ, गल मैं परिया फंद ।। 24।।

करता दीसै कीरतन, ऊँचा करि करि तूँड।
जानैं बूझै कछु नहीं, यों ही अंधा रूँड ।। 25।।

सबद

[1] एक अचंभौ देखा रे भाई,
ठाढ़ा सिंघ चरावै गाई।। टेक।।
पहले पूत पीछे भई माई, चेला कै गुर लागै पाई।
जल की मछली तरवरि ब्याई, कूता कौ लै गई बिलाई॥
बैलहि डारि गोनि घरि आई, घोरै चढ़ि भैंस चरावन जाई॥
तलि करि साखा ऊपरि करि मूल, बहुत भाँति जड़ लागे फूल।
कहै कबीर या पद कौं बूझै, ताकौं तीनिउँ त्रिभुवन सूझै॥

[2] चलन चलन सब कोई कहत है।
नां जाँनो बैकुण्ठ कहाँ है।। टेक।।
जोजन एक परमिति नहिं जानैं, बातनि ही बैकुण्ठ बखानैं।
जब लग मनि बैकुण्ठ का आस, तब लग नहिं हरि चरन निवास।
कहे सुने कैसे पतिअइऐ, जब लग तहाँ आप नहिं जइऐ।
कहै कबीर यहु कहिऐ क हं, साध संगति बैकुण्ठहि आहि।

[3] दुलहिनीं गावहु मंगलचार।
हम घरि आए राजा राम भरतार॥ टेक॥
तन रत करि मैं मन रत करिहौं, पाँचउ तत बराती।
राम देव मोरै पाहुनै आए मैं जीवन मैं माती॥
सरीर सरोवर बेदी करिहौं, ब्रह्मा बेद उचारा।
राम देव संगि भांवरि लेइहौं; धंनि धंनि भाग हमारा॥
सुर तैंतीसों कोटिक आए, मुनिवर सहस अठासी।
कहैं कबीर हम ब्याहि चले हैं, पुरिख एक अबिनासी॥

[4] निरमल निरमल हरि गुण गावै।
सो भाई मेरै मनि भावै।। टेक।।
जो जन लेह खसम का नांउं, तिनकै मैं बलिहारै जांउं।
जिहिं घटि राम रहा भरपूरि, तिनकी पद पंकज हंम धूरि।
जाति जुलाहा मति का धीर, सहजि सहजि गुन रमै कबीर।।

[5] बालम आउ हमारे गेह रे।
तुम्ह बिन दुखिया देह रे॥ टेक॥
सब कोइ कहै तुम्हारी नारी मोकौं यह अन्देह रे।
एकमेक ह्वै सेज न सोवै तब लगि कैसा नेह रे।।
अन्न न भावै, नींद न आवै गृह बन धरै न धीर रे।
ज्यौं कामी कौ कांमिनि पियारी ज्यौं प्यासे को नीर रे।।
है कोई ऐसा पर उपगारी हरि सौं कहै सुनाइ रे।
अब तौ बेहाल कबीर भए हैं बिनु देखें जिउ जाइ रे।।

[6] बोलनां का कहिए रे भाई।
बोलत बोलत तत्त नसाई।। टेक।।
बोलत बोलत बढ़ै बिकारा, बिनु बोले क्या करहि बिचारा।
संत मिलहि कछु सुनिए कहिए, मिलहिं असंत मस्टि करि रहिए।
ग्यांनी सौं बोलैं उपकारी, मूरिख सौं बोलें झखमारी।
कहै कबीर आधा घट बोलै, भरा होइ तौ कबहु न बोलै।।

[7] मन रे जागत रहिये भाई।
गाफिल होइ बस्तु मति खोवै, चोर मूसै घर जाई।। टेक।।
षट चक्र की कनक कोठड़ी, बसत भाव है सोई।
ताला कूंची कुलफ के लागे, उघड़त बार न होई।
पंच पहरवा सोइ गए हैं, बसतैं जागन लागीं।
जरा मरण व्यापै कछु नाहीं, गगन मंडल लै लागी।
करत बिचार मनही मन उपजी, नौं कहीं गया न आया।
कहै कबीर संसा सब छूटा, रौंम रतन धन पाया।।

[8] माया महा ठगिनी हम जांनी।
तिरगुन फांसि लिए कर डोलै, बोलै मधुरी बानी।।
केसव कै कंवला होइ बैठी, सिव के भवन भवांनी।
पंडा कै मूरति होइ बैठी, तीरथ हू मैं पांनी।
जोगी कै जोगिनि होइ बैठी, राजा कै घरि रौंनीं।
काहू कै जोगिनि होइ बैठी, काहू कै कौड़ी कौंनी।
भगतां कै भगतिनि होइ बैठी, तुरकां कै तुरकांनी।
दास कबीर साहब का बंदा, जाकै हाथ बिकांनीं।।

[9] संतौ भाई आई ग्यांन की आंधी रे।
भ्रम की टाटी सभै उड़ांनी, माया रहै न बाँधी रे॥ टेक॥
दुचिते कौ दोइ थूँनि गिरांनी मोह बलेंडा टूटा।
त्रिसनां छांनि परी घर ऊपरि, दुरमति भांडा फूटा।
आंधी पाछै जो जल बरसै, तिहिं, तेरा जन भींनां।
कहै कबीर मनि भया प्रगासा उदै भानु जब चींना॥

[10] हम न मरैं मरिहैं संसारा,
हमकौ मिला जिआवनहारा।। टेक।।
साकत मरहि संत जन जीवहिं, भरि भरि रौंम रसाइन पीवहिं।
हरि मरिहैं तौ हमहूँ मरिहैं, हरि न मरै हम काहे को मरिहैं।
कहै कबीर मन मनहिं मिलावा, अमर भये सुखसागर पावा।।

सूरदास

विनय के पद

[1] अविगत-गति कछु कहत न आवै।
ज्यौं गूंगै मीठे फल कौ रस अंतरगत ही भावै।
परम स्वाद सबही सु निरंतर, अमित तोष उपजावै।
मन-बानी कौ अगम-अगोचर, सो जानै जो पावै।
रूप-रेख-गुन-जाति-जुगति-बिनु, निरालंब कित धावै।
सब बिधि अगम बिचारहिं तातै, सूर सगुन लीला पद गावै॥

[2] मेरो मन अनत कहाँ सुख पावै।
जैसे उड़ि जहाज कौ पंछी, फिरि जहाज पै आवै॥
कमल-नैन कौ छाँड़ि महातम, और देव कौ ध्यावै।
परमगंग कौ छाँड़ि पियासौ, दुर्मति कूप खनावै॥
जिहि मधुकर अंबुज-रस चाख्यौ, क्यों करील-फल खावै।
सूरदास, प्रभु कामधेनु तजि छेरी कौन दुहावै॥

बाललीला

[3] किलकत कान्ह घुटुरुवनि आवत।
मनिमय कनक नंद कै आँगन, बिंब पकरिबै धावत॥
कबहुँ निरखि हरि आपु छाँह कौं, कर सौं पकरन चाहत।
किलकि हँसत राजत द्वै दतियाँ, पुनि-पुनि तिहिं अवगाहत॥
कनक-भूमि पद कर-पग-छाया, यह उपमा इक राजति।
करि-करि प्रतिपद प्रति मनि बसुधा, कमल बैठकी साजति॥
बाल-दसा-सुख निरखि जसोदा, पुनि-पुनि नंद बुलावति।
अँचरा तर लै ढाँकि, सूर के प्रभु कौं दूध पियावति॥

[4] जसोदा हरि पालनै झुलावैं।
हलरावैं, दुलराइ मल्हावैं, जोइ-सोइ कछु गावैं॥
मेरे लाल कौ आउ निंदरिया, काहैं न आनि सुवावैं।
तू काहैं नहिं बेगहिं आवै, तोकौं कान्ह बुलावैं॥
कबहुँ पलक हरि मूँदि लेत हैं, कबहुँ अधर फरकावैं।
सोवत जानि मौन ह्वै कै रहि, करि-करि सैन बतावैं॥
इहिं अंतर अकुलाइ उठे हरि, जसुमति मधुरैं गावैं।
जो सुख सूर अमर-मुनि दुरलभ, सो नँद-भामिनि पावैं॥

[5] चरन गहे अँगुठा मुख मेलत।
नंद-घरनि गावति, हलरावति, पलना पर हरि खेलत॥
जे चरनारबिंद श्री-भूषन, उर तैं नैंकु न टारति।
देखौं धौं का रस चरननि मैं, मुख मेलत करि आरति॥
जा चरनारबिंद के रस कौं सुर-मुनि करत बिषाद।
सो रस है मोहूँ कौं दुरलभ, तातैं लेत सवाद॥
उछरत सिंधु, धराधर काँपत, कमठ पीठ अकुलाइ।
सेष सहसफन डोलन लागे हरि पीवत जब पाइ॥
बढ्यौ बृक्ष बट, सुर अकुलाने, गगन भयौ उतपात।

[6] सोभित कर नवनीत लिये।
घुटुरुनि चलत रेनु-तन-मंडित मुख दधि लेप किये॥
चारु कपोल, लोल लोचन, गोरोचन तिलक दिये।
लट लटकनि मनु मत्त मधुप गन, मादक मधुहिं पिये॥
कठुला कंठ वज्र केहरि नख राजत रुचिर हिये।
धन्य सूर एकौ पल इहिं सुख का सत कल्प जिये॥

[7] कान्ह चलत पग द्वै-द्वै धरनी।
जो मन मैं अभिलाष करति हो, सो देखति नँद-घरनी॥
रुनुक-झुनुक नूपुर पग बाजत, धुनि अतिहीं मन-हरनी।
बैठि जात पुनि उठत तुरतहीं सो छबि जाइ न बरनी॥
ब्रज-जुवती सब देखि थकित भईं, सुंदरता की सरनी।
चिरजीवहु जसुदा कौ नंदन सूरदास कौं तरनी॥

[8] कहन लागे मोहन मैया-मैया।
नंद महर सौं बाबा-बाबा, अरु हलधर सौं भैया॥
ऊँचे चढ़ि-चढ़ि कहति जसोदा, लै लै नाम कन्हैया।
दूरि खेलन जनि जाहु लला रे, मारैगी काहु की गैया॥
गोपी-ग्वाल करत कौतूहल, घर-घर बजति बधैया।
सूरदास प्रभु तुम्हरे दरस कौ, चरननि की बलि जैया॥

[9] मैया री मैं चंद लहौंगौ।
कहा करौं जलपुट भीतर कौ, बाहर ब्यौंकि गहौंगौ॥
यह तौ झलमलात झकझोरत, कैसैं कै जु लहौंगौ?
वह तौ निपट निकटहीं देखत, बरज्यौ हौं न रहौंगौ॥
तुम्हरौ प्रेम प्रगट मैं जान्यौ, बौराएँ न बहौंगौ।
सूरस्याम कहै कर गहि ल्याऊँ ससि-तन-दाप दहौंगौ॥

[10] माखन बाल गोपालहिं भावै ।
भूखे छिन न रहत मन मोहन, ताहि बदौं जो गहरु लगावै ॥
आनि मथानी दह्यौ बिलोवौं, जो लगि लालन उठन न पावै ।
जागत ही उठि रारि करत है, नहिं मानै जौ इंद्र मनावै॥
हौं यह जानति बानि स्याम की, अँखियाँ मीचे बदन चलावै ।
नंद-सुवन की लगौं बलैया, यह जूठनि कछु सूरज पावै॥

[11] खेलत स्याम ग्वालनि संग।
सुबल हलधर अरु श्रीदामा, करत नाना रंग॥
हाथ तारी देत भाजत, सबै करि करि होड़।
बरजै हलधर! तुम जनि, चोट लागै गोड़॥
तब कह्यौ मैं दौरि जानत, बहुत बल मो गात।
मेरी जोरी है श्रीदामा, हाथ मारे जात॥
उठे बोलि तबै श्रीदामा, जाहु तारी मारि।
आगैं हरि पाछैं श्रीदामा, धर्‌यो स्याम हँकारि॥
जानि कै मैं रह्यो ठाढ़ौ छुवत कहा जु मोहि।
सूर हरि खीझत सखा सौं, मनहिं कीन्हौ कोह॥

[12] खेलत मैं को काको गुसैयाँ ।
हरि हारे जीते श्रीदामा, बरबसहीं कत करत रिसैयाँ ॥
जात-पाँति हम ते बड़ नाहीं, नाहीं बसत तुम्हारी छैयाँ ।
अति अधिकार जनावत यातैं, जातैं अधिक तुम्हारैं गैयाँ ॥
रुहठि करै तासौं को खेलै, रहे बैठि जहँ-तहँ सब ग्वैयाँ ।
सूरदास प्रभु खेल्यौइ चाहत, दाउँ दियौ करि नंद-दुहैयाँ ॥

[13] मैया ! हौं न चरैहौं गाइ।
सिगरे ग्वाल घिरावत मोसौं, मेरे पाइ पिराइ॥
जौ न पत्याहि पूछि बलदाउहि, अपनी सौंह दिवाइ।
यह सुनि माइ जसोदा ग्वालनि, गारी देति रिसाइ॥
मैं पठवति अपने लरिका कौं, आवै मन बहराइ।
सूर स्याम मेरो अति बालक, मारत ताहि रिंगाइ॥

प्रेमलीला

[14] खेलन हरि निकसे ब्रज-खोरी।
कटि कछनी पीताम्बर बाँधे, हाथ लए भौरा, चक डोरी।।
मोर-मुकुट, कुडल स्रवननि बर, दसन-दमक दामिनि-छवि छोरी।
गए स्याम रबि-तनया के तट, अंग लसति चंदन को खोरी।।
औचक ही देखी तह राधा, नैन बिसाल भाल दिये रोरी।
नील बसन फरिया कटि पहिरे, बेनि पीठि रूलति झकझोरी।।
संग लरिकिनी चलि इत आवति, दिन-थोरी, अति छबि तन-गोरी।
सूर स्याम देखत ही रीझे, नैन-नैन मिलि परी ठगोरी।।

वियोग

[15] खंजन नैन सुरंग रस माते।
अतिसय चारु बिमल, चंचल ये, पल पिंजरा न समाते।
बसे कहूँ सोइ बात सखी, कहि रहे इहाँ किहि नातैं?
सोइ संज्ञा देखति औरासी, बिकल उदास कला तैं।।
चलि-चलि जात निकट स्रवननि के सकि ताटंक फंदाते।
सूरदास अंजन गुन अटके, नतरु कबै उड़ि जाते।।

[16] ब्रज बसि काके बोल सहौं।
तुम बिनु स्याम और नहिं जानौ, सकुचि न तुमहिं कहौं।।
कुल की कानि कहा लै करिहौं तुमकों कहाँ लहौं।
धिक माता, धिक पिता बिमुख तुव भावे तहाँ बहौं।।
कोउ कछु करै, कहै कछु कोऊ, हरष न सोक गहौं।
सूर स्याम तुमको बिनु देखे, तनु मन जीव दहौं।।

भ्रमरगीत

[17] गोकुल सबै गोपाल उदासी।
जोग-अंग साधत जे ऊधो ते सब बसत ईसपुर कासी।।
यद्यपि हरि हम तजि अनाथ करि तदपि रहति चरननि रसरासी।।
अपनी सीतलताहि न छाँड़त यद्यपि है ससि राहु-गरासी।।
का अपराध जोग लिखि पठवत प्रेम भजन तजि करत उदासी।
सूरदास ऐसी को बिरहनि, माँगति मुक्ति तजै गुनरासी?।।

[18] जीवन मुँहचाही को नीको।
दरस परस दिन रात करति है कान्ह पियारे पी को।।
नयनन मूँदि-मूँदि किन देखौ, बँध्यो ज्ञान पोथी को।।
आछे सुन्दर स्याम मनोहर और जगत सब फीको।
सूनौ जोग को का लै कीजै जहाँ ज्यान है जी कौ?
खाटी मही नहीं रुचि मानै सूर खबैया घी को।।

[19] आयो घोष बड़ो व्योपारी।
लादि खेप गुन ज्ञान-जोग की ब्रज में आन उतारी।।
फाटक दै कर हाटक माँगत भोरै निपट सु धारी।
धुर ही तें खोटो खायो है, लये फिरत सिर भारी।।
इनके कहे कौन डहकावै ऐसी कौन अजानी?
अपनों दूध छाँड़ि को पीवै, खार कूप को पानी।।
ऊधो जाहु सबार यहाँ तें बेगि गहरु जनि लावौ।
मुँहमाँग्यो पैहो सूरज प्रभु, साहुहि आनि दिखावौ।।

[20] जोग ठगौरी ब्रज न बिकैहैं।
यह ब्योपार तिहारो ऊधो! ऐसोई फिरि जैहैं।।
जापै लै आए हो मधुकर ताके उर न समैहैं।
दाख छाँड़ि कै कटुक निंबौरी को अपने मुख खैहैं?
मूरी के पातन के केना, को मुक्ताहल दैहैं।
सूरदास प्रभु गुनहि छाँड़ि कै को निर्गुन निरबैहैं?।।

[21] आए जोग सिखावन पाँड़े।
परमारथी पुराननि लादे ज्यों बनजारे टाँड़े।।
हमरे गति पति कमलनयन की जोग सिखैं ते राँड़े।
कहौ मधुप, कैसे समायेंगे एक म्यान दो खाँडे।।
कहु षटपद, कैसे खैयतु है, हाथिनि के सँग गाड़े।।
काकी भूख गई बयारि भखि बिना दूध घृत माँड़े।
काहे जो झाला लै मिलवत, कौन चोर तुम डाँड़े।।
सूरदास तीनों नहिं उपजत धनिया धान कुम्हाँड़े।।

[22] ए अलि! कहा जोग मैं नीको?
तजि रसरीति नंदनंदन की सिखवत निर्गुन फीको।।
देखत सुनत नाहिं कछु स्रवननि, ज्योति ज्योति करि ध्यावत।
सुन्दर स्याम दयालु कृपानिधि कैसै हौ बिसरावत?
सुनि रसाल मुरली-सुर की धुनि सोइ कौतुक रस भूलैं।
अपनी भुजा ग्रीव पर मेलैं गोपिन के सुख फूलैं।।
लोककानि कुल को भ्रम प्रभु मिलि-मिलि कै घर बन खेली।
अब तुम सूर खवावन आए जोग जहर की बेली।।

[23] हमरै कौन जोग ब्रत साधै?
मृगत्वच भस्म अधारी, जटा को को इतनौ अवराधै?
जाकी कहूँ थाह नहिं पैए अगम, अपार, अगाधै।
गिरिधर लाल छबीले मुख पर इते बाँध को बाँधै?
आसन पवन विभूति मृगछाला ध्याननि को अवराधै?
सूरदास, मानिक परिहरि कै राख गाँठि को बाँधै।।

[24] हम तो दुहूँ भाँति फल पायो।
को ब्रजनाथ मिलैं तो नीको नातरु जग जस गायो।
कहँ वै गोकुल की गोपी बरनहीन लघुजाति।
कहँ वै कमला के स्वामी सँग मिल बैठीं इक पाँति।।
निगमध्यान मुनिज्ञान अगोचर, ते भए घोष निवासी।।
ता ऊपर अब साँच कहौ धौं मुक्ति कौन की दासी?
जोग-कथा पा लागौं ऊधो, न कहु बारंबार।
सूर स्याम तजि और भजै जो ताकी जननी छार।।

[25] हमतें हरि कबहूँ न उदास।
राति खबाय पिवाय अधररस क्यों बिसरत सो ब्रज को वास।।
तुमसों प्रेम कथा को कहिबो मनहुँ काटिबो घास।
बहिरो तान-स्वाद कहँ जानै, गूँगो-बात-मिठास।
सुनि री सखी, बहुरि फिरि ऐहैं वे सुख बिबिध बिलास।
सूरदास ऊधो अब हमको भयो तेरहों मास।।

[26] निरखति अंक स्याम सुंदर के बार-बार लावति लै छाती।
लोचन जल कागद मसि मिलि कै ह्वै गई स्याम स्याम जू की पाती।।
गोकुल बसत संग गिरिधर के, कबहुँ बयारि लागि नहिं ताती।
तब की कथा कहा कहौं, ऊधौ जब हम बेनुनाद सुनि जाती।।
हरि के लाड़ गनति नहिं काहूँ, निसि दिन सुदिन रासरसमाती।
प्रान-नाथ तुम कबधौं मिलौगे, सूरदास-प्रभु बाल-सँघाती।।

[27] देखियति कालिंदी अति कारी।
कहियो, पथिक! जाय उन हरि सौं, भई बिरह जुर जारी।।
मनो पलिका पै परी धरनि धँसि, तरँग तरफ तनु भारी।
तट बारू उपचार-चूर मनो, स्वेद प्रवाह पनारी।।
बिगलित कच कुस कांस पुलिन मनो, पंक जु कज्जल सारी।
भ्रमर मनो मत भ्रमत चहूँ दिसि, फिरति है अंग दुखारी।।
निसि दिन चकई ब्याज बकत मुख, किन मनहु अनुहारी।
सूरदास-प्रभु जो जमुना-गति, सो गति भई हमारी।।

[28] ऊधौ इतनी कहियौ बात।
मदन गुपाल बिना या ब्रज मैं, होन लगे उतपात।।
तृनावर्त, बक, बकी, अघासुर, धेनुक फिरि-फिरि जात।
ब्योम, प्रलंब कंस केसी इत, करत जिअनि की घात।।
काली काल-रूप दिखियत है, जमुना जलहिं अन्हात।
बरुन फाँस फाँस्यौ चाहत है, सुनियत अति मुरझात।
इन्द्र आपने परिहँस कारन, बार बार अनखात।
गोपी, गाइ, गोप, गोसुत सब, थर थर काँपत गात।।
अंचल फारति जननि जसोदा, पाग लिये कर तात।
लागौ बेगि गुहारि सूरि-प्रभु गोकुल बैरिनि घात।।

[29] ऊधो भली करी तुम आए।
ये बातें कहि-कहि या दुख में, ब्रज के लोग हँसाए।।
कौन काज बृंदावन कौ सुख, दही भात की छाक।
अब वै कान्ह कूबरी राचे, बने एक ही ताक।।
मोर मुकुट मुरली पीतांबर, पठवौ सौंज हमारी।
अपनी जटाजूट अरु मुद्रा धरि, लीजै भस्म अधारी।।
वै तो बड़े सखा तुम उनके, जिनको सुगम अनीति।
सूर सबै मति भली स्याम जमुना जल सों प्रीति।।

पुनर्मिलन

[30] राधा माधव, भेंट भई।
राधा माधव, माधव राधा, कीट-भृंग गति है जु गई।।
माधव राधा के रंग राँचे, राधा माधव रंग रई।
माधव राधा प्रीति निरंतर, रसना करि सो कहि न गई।।
बिहँसि कह्यौ हम तुम नहिं अंतर, यह कहिकै उन ब्रज पठई।
सूरदास प्रभु राधा माधव, ब्रज-बिहार नित नई नई।।

घनानन्द

[1]

झलकै अति सुन्दर आनन गौर, छके दृग राजत काननि छ्वै।
हँसि बोलनि मैं छबि-फूलन की बरषा, उर ऊपर जाति है ह्वै।
लट लोल कपोल कलोल करैं, कल कंठ बनी जलजावलि द्वै।
अंग अंग तरंग उठै दुति की, परिहै मनौ रूप अबै धर च्वै।।

[2]

अति सुधो सनेह को मारग है जहाँ नैकु सयानप बाँक नहीं।
तहाँ साँचे चलैं तजि आपुनपौ झझकैं कपटी जे निसाँक नहीं।।
घन आनँद प्यारे सुजान सुनौ यहाँ एक ते दूसरो आँक नहीं।
तुम कौन धौं पाटी पढ़े हौ लला मन लेहु पै देहु छटाँक नहीं।।

[3]

भए अति निठुर, मिटाय पहचानि डारी,
याही दुख हमैं जक लागी हाय हाय है।
तुम तो निपट निरदई, गई भूलि सुधि,
हमैं सूल-सेलनि सो क्यों हूँ न भुलाय है।
मीठे-मीठे बोल बोलि, ठगी पहिले तौ तब,
अब जिय जारत कहौ धौं कौन न्याय है।
सुनी है कै नाहीं, यह प्रगट कहावति जू,
काहू कलपायहै सु कैसें कल पायहै।।

[4]

हीन भएँ जल मीन अधीन, कहा कछु मो अकुलानि- समानै।
नीर-सनेही कों लाय कलंक निरास ह्वै कायर त्यागत प्रानै।
प्रीति की रीति सु क्यों समुझे जड़, मीत के पानि परे कों प्रमानै।
या मन की जु दसा घनआनँद जीव की जीवनि जान ही जानै।।

[6]

रावरे रूप की रीति अनूप, नयो नयो लागत ज्यौं ज्यौं निहारियै।
त्यौं इन आँखिन वानि अनोखी, अघानि कहूँ नहिं आनि तिहारियै।
एक ही जीव हुतौ सु तौ वार्‌यो, सुजान, सँकोच और सोच सहारियै।
रोकी रहै न, दहै घनआनँद बावरी रीझि के हाथन हारियै।

[5]

पहिलें अपनाय सुजान सनेह सों, क्यों फिरि तेह को तोरियै जू।
निरधार अधार दै धार-मँझार दई गहि बाँह न बोरियै जू।
घनआनँद आपने चातिक कों गुन-बाँधिलै मोह न छोरियै जू।
रस प्याय के ज्याय बढ़ाय के आस, बिसास मैं यौं विष घोरियै जू।।

[7]

आँखें जौं न देखें तो कहा हैं कछु देखति ये,
ऐसी दुखहाइनि की दसा आय देखियै।
प्रानन के प्यारे जान रूप उजियारे, बिना
मिलन तिहारे, इन्हें कौन लेखें लेखियै।

नीर-प्यारे मीन औ चकोर चंदहीन हूँ तें,
अति ही अधीन दीन गति मति पेखियै।
हौं जू घनआनँद ढरारे रसभरे भारे,
चातिक विचारे सों न चूकनि परेखियै।।

[8]

आसा-गुन बाँधि के भरोसो-सिल धारि छाती,
पूरे पन-सिन्धु मैं न बूड़त सकायहौं।
दु:ख-दव हिय जारि अन्तर उदेग-आँच,
रोम-रोम त्रासनि निरन्तर तचायहौं।
लाख-लाख भाँतिन की दुसह दसानि जानि,
साहस सहारि सिर आरे लौं चलायहौं।
ऐसे घनआनँद गहा है टेक मन माहिं,
एरे निरदई तोहिं दया उपजायहौं।।

[9]

चातिक चुहल चहुँ ओर चाहै स्वाति ही कों
सूरे पन-पूरे जिन्हैं विष सम अमी है।
प्रफुलित होत भान के उदोत कंज-पुंज,
ता बिन बिचारनि हीं जोति-जाल तमी है।
चाहौ अनचाहौ जान प्यारे पै अनंदघन,
प्रीति-रीति विषम सु रोम-रोम रमी है।
मोहिं तुम एक, तुम्हैं मो सम अनेक आहिं,
कहा कछू चंदहिं चकोरन की कमी है।।

[10]

आस ही अकास-मधि अवधि-गुनै बढ़ाय,
चोपनि चढ़ाय दीनौ कीनौं खेल सो यहै।
निपट कठोर एहो ऐंचत न आप-ओर,
लाड़िले सुजान सों दुहेली दसा को कहै।
अचिरजमई मोहिं भई घनआनंद यौं,
हाथ साथ लाग्यौ पै समीप न कहूँ लहै।
विरह-समीर की झकोरनि अधीर, नेह
नीर भीज्यौ जीव तऊ गुड़ी लौं उड़्यौ रहै।।

[11]

विष लै बिसार यौ तन, कै बिसासी आपचार्‌यौ,
जानै हुतौ मन, तैं सनेह कछु खेल सो।
अब ताकी ज्वाल मैं पजरिबो रे भली भाँति,
नीके आहि, असह उदेग-दुख सेल सो।
गए उड़ि तुरत पखेरू लौं सकल सुख,
पर्‌यौ आय औचक बियोग बैरी डेल सो।
रुचि ही के राजा जान प्यारे यौं अनंदघन,
होत कहा हेरे रंग मानि लीनौ मेल सो।।

[12]

अंतर उदेग-दाह, आँखिन प्रबाह-आँसू,
देखी अटपटी चाह भीजनि दहनि है।
सोइबो न जागिबो हो, हँसिबो न रोइबो हूँ,
खोय-खोय आप ही मैं चेटक-लहनि है।
जान प्यारे प्राननि बसत पै अनंदघन,
बिरह-बिषम दसा मूक लौं कहनि है।
जीवन मरन जीव मीच बिना बन्यौ आय,
हाय कौन बिधि रची नेही की रहनि है।।

[13]

पाती-मधि छाती-छत लिखि न लिखाए जाहिं,
काती लै बिरह घाती कीने जैसे हाल हैं।
आँगुरी बहकि तहाँ पाँगुरी किलकि होति,
ताती राती दसनि के जाल ज्वाल-माल हैं।
जान प्यारे जौऽब कहूँ दीजियै सँदेसो तौऽब,
आँवाँ सम कीजियै जु कान तिहि काल हैं।
नेह-भीजी बातैं रसना पैं उर-आँच लागै,
जागैं घनआनँद ज्यौं पुंजनि मसाल हैं।।

[14]

अकुलानि के पानि पर्‌यौ दिनराति सु ज्यौ छिनकौ न कहूँ बहरै।
फिरि चोई करै चित चेटक चाक लौं धीरज तो ठिकु क्या ठहरै।
भए कागद-नाव उपाव सबै घनआनँद नेह नदी गहरै।
बिन जान सजीवन कौन हरै सजनी बिरहा-विष की लहरै।।

[15]

ऐरे बीर पौन, तेरो सबै ओर गौन, बीरी
तो सो और कौन मनैं ढरकौंहीं बानि दै।
जगत के प्रान ओछे बड़े सों समान घन-
आनँद-निधान, सुखदान दुखियानि दै।
जान उजियारे गुन-भारे अंत मोहि प्यारे,
अब ह्वै अमोही बैठे पीठि पहिचानि दै।
बिरह-बिथाहि मूरि आँखिन मैं राखौं पूरि,
धूरि तिन पायन की हाहा! नैकु आनि दै।।

[16]

पूरन प्रेम को मंत्र महा पन, जा मधि सोधि सुधारि है लेख्यौ।
ताही के चारु चरित्र विचित्रनि यौं पचिकै रचि राखि बिसेख्यौ।
ऐसे हियो हितपत्र पवित्र जु आन-कथा न कहूँ अवरेख्यौ।
सो घनआनँद जान-अजान लौं टूक कियौ पर बाँचि न देख्यौ।।

[17]

कारी कूर कोकिला कहाँ को बैर काढ़ति री,
कूकि-कूकि अब ही करेजो किन कोरि लै।
पैंड़े परे पापी ये कलापी निस द्यौस ज्यौं ही,
चातक घातक त्यौं ही तू हू कान फोरि लै।
आनँद के घन प्रान-जीवन सुजान बिन,
जानि कै अकेली सब घेरौ दल जोरि लै।
जौ लौं करैं आवन बिनोद-बरसावन वे,
तौ लौं रे डरारे बजमारे घन घोरि लै।

[18]

आनाकानी आरसी निहारिबौ करौगे कौ लौं,
कहा मो चकित दसा त्यौं न दीठि डोलिहै।
मौन हू यौं देखिहौं, कितेक पन पालिहौ जू
कूक भरी मूकता बुलाय आप बोलिहै।
जान घनआनँद यौं मोहिं तुम्हैं पैज परी,
जानियैगी टेक टरें कौन धौं मलोलिहै।
रुई दिये रहौगे कहाँ लौं बहरायबे की,
कबहूँ तौ मेरियै पुकार कान खोलिहै।।

[19]

निस-द्यौस खरी उर माँझ अरी, छवि रंग-भरी मुरि चाहनि की।
तकि मोरनि त्यौं चख ढोर रहे, ढरि गौ हिय ढोरनि वाहनि की।
चटि दै कटि पै बटि प्रान गए गति सों मति मैं अवगाहनि की।
घनआनँद जान लख्यौ जब तें जक लागियै मोहिं कराहनि की।।

[20]

कंत रमै उर-अंतर मैं सु लहै नहीं क्यौं सुख रासि निरंतर।
दंत रहैं गहैं आँगुरी ते जु वियोग के तेह तचे परतंतर।
जो दुख देखति हौं घनआनँद रैन-दिना बिन जान सुतंतर।
जानैं वेई दिन-राति, बखाने तें जाय परै दिन-राति को अंतर।।

बिहारी

मेरी भव-बाधा हरौ, राधा नागरि सोय।
जा तन की झाईं परै, स्याम हरित दुति होय ॥ 1 ॥

नीकी दई अनाकनी, फीकी परी गुहारि।
तज्यौ मनौ तारन-बिरदु बारक बारनु तारि ॥ 2 ॥

पत्रा ही तिथि पाइये वा घर कै चहुँपास।
नित प्रति पून्योई रहत आनन-ओप-उजास ॥ 3 ॥

तंत्रीनाद, कवित्त रस, सरस राग, रति रंग।
अनबूड़े बूड़े तिरे जिन बूड़े सब अंग ॥ 4 ॥

लिखन बैठि जाकी सबी, गहि गहि गरब गरूर।
भये न केते जगत के चतुर चितेरे कूर ॥ 5 ॥

अजौं तर्‌यौना ही रह्यौ, श्रुति सेवत इक रंग।
नाक-बास बेसरि लह्यौ बसि मुकुतन के संग ॥ 6 ॥

तो पै वारौं उरबसी, सुनि राधिके सुजान।
तू मोहन कैं उर बसी, ह्वै उरबसी-समान ॥ 7 ॥

जगतु जनायौ जिहिं सकलु, सो हरि जान्यौ नाहिं।
ज्यौं आँखियन सब देखियै, आँखि न देखी जाहिं ॥ 8 ॥

दृग उरझत, टूटत कुटुम, जुरत चतुर चित प्रीति।
परति गाँठ दुरजन हियै, दई नई यह रीति ॥ 9 ॥

कहलाने एकत बसत अहि मयूर मृग बाघ।
जगतु तपोवन सो कियो, दीरघ-दाघ निदाघ ॥ 10 ॥

आवत जात न जानियतु, तेजहिं तजि सियरान।
घरहिं जँवाई लौं घट्यौ, खरौ पूस दिन मान ॥ 11 ॥

चटक न छाड़त घटत हू सज्जन नेहु गंभीरु।
फीकौ परै न, बरु फटै, रंग्यौ चोल रंग चीरु ॥ 12 ॥

जोग-जुगति सिखए सबै, मनौ महामुनि मैन।
चाहत पिय-अद्वैतता, काननु सेवत नैन ॥ 13 ॥

मंगल बिंदु सुरंगु मुख-ससि केसरि-आड़ गुरु।
इक नारी लहि संगु रसमय किय लोचन जगत ॥ 14 ॥

खौरि-पनिच, भृकुटि-धनुष, वधिकु-समरु, तजि कानि।
हनतु तरुन-मृग, तिलक-सर सुरक-भाल, भरि तानि ॥ 15 ॥

जाति मरी बिछुरी घरी, जल-सफरी की रीति।
खिन खिन होति खरी खरी, अरी जरी यह प्रीति॥ 16॥

स्वारथु सुकृतु न, श्रमु-वृथा, देखि, विहंग विचारि।
बाज, पराएँ पानि परि, तूँ पच्छीनु न मारि॥ 17॥

इत आवति चलि जात उत, चली छ-सातक हाथ।
चढ़ी हिंडोरैं सी रहै, लगी उसासनु साथ॥ 18॥

रनित-भृंग-घंटावली, झरित दान मधुनीर।
मन्द-मन्द आवत चल्यौ, कुंजर-कुंज-समीर॥ 19॥

करौ कुबत जगु कुटिलता, तजौं न दीनदयाल।
दु:खी होहुगे सरल हिय, बसत त्रिभंगी लाल॥ 20॥

बतरस-लालच लाल की, मुरली धरी लुकाइ।
सौंह करैं भौंहनु हँसैं, दैन कहैं, नटि जाइ॥ 21॥

अनियारे दीरघ दृगनु, किती न तरुनि समान।
वह चितवनि औरै कछू, जिहिं बस होत सुजान॥ 22॥

मैं समुझ्यौ निरधार, यह जगु काँचो काँच सौ।
एकै रूपु अपार प्रतिबिंबित लखियतु जहाँ॥ 23॥

बड़े न हूजै गुननु बिनु, बिरद-बड़ाई पाइ।
कहत धतूरे सौ कनकु, गहनौ गढ़्यौ न जाइ॥ 24॥

निसि अँधियारी, नील पटु, पहिरि चली पिय-गेह।
कहौ, दुराई क्यों दुरै दीप-सिखा सी देह॥ 25॥

औंधाई सीसी, सु लखि बिरह-बरनि बिललात।
बिच ही सूखि गुलाबु गौ, छीटौ छुई न गात॥ 26॥

कौड़ा आँसू-बूँद, कसि साँकर बरुनी सजल।
कीने बदन निमूँद, दृग-मलिंग डारे रहत॥ 27॥

संगति-दोषु लगै सबनु, कहे ति साँचे बैन।
कुटिल-बंक-भ्रुव-सँग भए कुटिल, बंक-गति नैन॥ 28॥

कर लै चूमि चढ़ाय सिर, उर लगाय भुजि भेंटि।
लहि पाती पिय की लखति, बाँचति धरति समेटि॥ 29॥

इन दुखिया अँखियान कौ सुख सिरज्योई नाहिं।
देखत बनै न देखतै, बिनु देखे अकुलाहिं॥ 30॥

बी० ~~ए~~. ए. हिन्दी ~~प्रथम~~

द्वितीय प्रश्नपत्र : हिन्दी निबन्ध, नाटक एवं एकांकी

पूर्णांक: 100

परीक्षा प्रणाली- बहुविकल्पीय OMR शीट पर

(क) निबन्ध : निर्धारित निबन्धकार :

1- ईश्वर की मूर्ति - प्रताप नारायण मिश्र
2. कवि-कर्त्तव्य - आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी
3. लोभ और प्रीति - आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
4. देवदारु - आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी
5. लेखक और जनता - डॉ० राम विलास शर्मा
6. आँगन का पंछी - डॉ० विद्यानिवास मिश्र
7. आधुनिक सन्दर्भ में साहित्यकार की भूमिका - कुबेरनाथ राय

पाठ्य पुस्तक का नाम - निबन्ध दर्पण

सम्पादक : (1) डॉ० प्रभाकर मिश्र, अध्यक्ष हिन्दी विभाग, आ.न. दे. कि. पी.जी. कालेज, बभनान, गोण्डा
(2) डॉ० मधु खन्ना, हिन्दी विभाग, राजा मोहन गर्ल्स पी०जी० कालेज, फैजाबाद

(ख) नाटक : ध्रुवस्वामिनी - जयशंकर प्रसाद

(ग) एकांकी : निर्धारित एकांकीकार

1. कौमुदी महोत्सव - डॉ० राम कुमार वर्मा
2. स्ट्राइक - भुवनेश्वर प्रसाद
3. लक्ष्मी का स्वागत - उपेन्द्रनाथ 'अश्क'
4. कुमार सम्भव - उदयशंकर भट्ट
5. एक दिन - लक्ष्मीनारायण मिश्र

पाठ्य पुस्तक - एकांकी निकुंज

सम्पादक : (1) डॉ० (श्रीमती) रेखा श्रीवास्तव, इन्दिरा गाँधी महाविद्यालय, गौरीगंज, अमेठी।
(2) डॉ० आशुतोष मिश्र, हिन्दी विभाग, महामाया राज० महा० श्रावस्ती।